'उत्तरी भारत की राजनीतिक दशा'
800–1200 AD तक

(1) गुर्जर प्रतिहार वंश (कन्नौज)

1. संस्थापक नाटभट्ट प्रथम (730–756)– ग्वालियर अभिलेख से ज्ञात होता है कि इसने अरबो को सिंध से आगे बढ़ने से रोकने में सफलता मिली थी।

2. मिहिर भोज– (836–882) – इसने कन्नौज को राजधानी बनाया। इसके शासन काल में अरब यात्री सुलेमान (1851) आया था। यह वैष्णव अनुयायी था तथा आदि वराह की उपाधि धारण किया था।

3. महेन्द्रपाल (885–910) – इसकी राज्य सभा में राज शेखर उसके राजगुरू थे। राजशेखर ने – कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, सुवनकोष, विद्धशाल भंजिका, वालरा मायन, हरविलास की रचना किया।

4. गुर्जर प्रतिहार के बाद कन्नौज में गहड़वाल वंश की स्थापना हुई।

5. गुजरात के चालुक्य, जेजामभुक्ति के चंदेल, ग्वालियर के कच्छपद्यात, त्रिपुरी के कल चुरी, मालवा के परमार, राजस्थान के गुहिल, शाकम्भरी (अजमेर) के चौहान आदि प्रतिहारों के सामंत थे जिन्होने अपनी स्वतंत्रता धाषित कर दी।

(2) गहड़वाल का राठौर वंश

राजधानी – कन्नौज

1. संस्थापक – चन्द्रदेव (1085–90 के मध्य)

2. गोविन्द चन्द – (1114–1155) इसे विविध विद्या विचार वाचस्पति कहा जाता है।

(3) अजमेर – शाकम्भरी का चाहवान वंश। राजधानी अजमेर।

1. संस्थापक – वासुदेव

2. राजधानी – अजमेर।

3. अजय राज – इसने अजमेर नगर बसाकर अपनी राजधानी बनाया।

4. विग्रहराजचतुर्थ – इसे वीसलदेव के नाम से भी जाना जाता है। सोमदेव इसके दरबार में निवास करता था।

5. पृथ्वी राज तृतीय – 1199–1192 रायपिथौरा

- इसने चंदेल शासक परमर्दिदेव को हराया आल्हाउदक मारे गये ।
- गुजरात के चालुक्य शासक भीम को हरा कर मार डाला।

कवि– जयानक भट्ट, विधापति गौड़, पृथ्वी भट्ट, जर्नादन, विश्वरूप, बागीश्वर निवास करते थे। चन्दरबाई उसका राजकवि था। पृथ्वीराज रासों– हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना जाता है।

(4) मालवा के परमार वंश – राजधानी धारा संस्थापक, सीयक द्वितीय, इसके प्रारम्भिक नरेश राष्ट्रकूट राजाओं के सामंत थे।

1. सम्पत्ति मंजु–(973–995 AD) –परमारों की कल्याणी के चालुक्यों की पुरानी शत्रुता थी। इसने कलयाणी के चालुक्य नरेश तौल द्वितीय को छः बार पराजित किया। किन्तु सातवी बार युद्ध में बंदी बनाकर मार डाला गया।

इसके दरबार में – दशरूपक का लेखक घनन्जय घनिक तथा पदमगुप्त निवास करते थे। पदमगुप्त इसका राजकति था।

2. सिन्धु राज– राजकवि पदमगुप्त

3. राजाभोज – उपाधि कविराज

उदय पुर प्रशस्ति में इसकी राजनैतिक उपलब्धियों का वर्णन है। इसे चालुक्य नरेश जय सिंह व चंदेल विद्याधर ने हराया था।

कवि – भोज ने स्वंय – श्रंगार प्रकाश, श्रंगार मंजरी, कृत्यकल्प तरू, तत्व प्रकाश आदि की रचना किया।

4. यह प्रत्येक कवि को हर लोक पर एक लाख मुद्राये प्रदान करना था। इसने भोजसर नामक तालाब, भोजन पुर नामक पगर तथा धारा के समीप सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया था।

5. जेजाक भुक्ति के चंदेल राजधानी – खजुराही उप महोवा संस्थापक हर्ष व यशोवर्मन।

1. धंग– धंग ने अपनी राजधानी कालंजर के बदले खजुराहों को बनाया।

2. विधाधर– यह महमूद गजनवी से जयचंद के समर्पण के कारण, कन्नौज नरेश को दंडित करने के लिए भारतीय नरेशों का एक संघ बनाया था। बाद में यह महमूद से पराजित होकर उसससे संधि किया।

इस प्रकार यह अकेला भारतीय नरेश था, जिसने महमूद गजनवी की महत्वकांक्षाओं का सफलता पूर्वक विरोध किया था।

3. परमार्दिदेव– शिव विष्णु व जैन है।

4. कलचुरि का चेदि राजवंश

राजधानी – त्रिपुरी

संस्थापक – कोक्कल प्रथम

कर्णदेव– इसने कलिंग को हराकर त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण किया था। इसने हुण राजकुमारी आवल्लदेवी से विवाह किया था। यह शैव था।

5. गुजरात के चालुक्य वंश – राजधर्म राजधानी अनहिल वाडा ये सभी जैन थे।

- संस्थापक – मूलराज प्रथम
- भीमदेव प्रथम – इसने महमूद द्वारा ध्वस्त सोमनाथ मंदिर का पुनः निर्माण कराया था।
- इसके सामंत विमल ने आबू पर्वत पर प्रसिद्ध दिलवाड़ा मंदिर का निर्माण करवाया था।
- जयसिंह सिद्धराज – (1094–1143) – इसने सहतलिंग झील का निर्माण करवाया था। हेमचन्द्र इसका दरबारी था। परिशिष्ट पर्वत (जैन ग्रंथो)
- मूलराज द्वितीय या भील द्वितीय– यह प्रथम नरेश था जिसने 1178 में आबू पर्वत के निकट मुहम्मद गोरी को पराजित किया था।

तुर्को का आक्रमण

इस्लाम का नेतृत्व सर्वप्रथम अरबों के हाथ में आया। तुर्क अरबों तथा इरानियों की तुलना में अधिक बर्बर थे। क्योंकि ये इस्लाम के नवीन अनुयायी थे। जिससे इनमें धार्मिक जोश और मदान्धता अधिक थी। फिर भी तुर्क मंगोलो की भांति बर्बर नहीं थे।

राजधानी गजनी– महमूद गजनवी – (971–1030)– सिक्कों पर अमीर महमूद

1. यह यामिनी वंश का था। सर्वप्रथम इसने सुल्तान की पदवी धारण किया। बगदाद के खलीफा से इसे उपाधि मिली थी।
2. आक्रमण का मुख्य कारण– सम्पत्तिा का लूटना था।
3. सरहेनरी इलियट के अनुसार– महमूद ने भारत पर 17 बार हमला किया।

आक्रमण–

- प्रथम आक्रमण– 1000AD– अंतिम 1027 AD इस समय सिन्ध व सुल्तान में मुसलमानी राज्य थे। ब्राह्मण हिन्दू शाही राज्य – राजा जयपाल ने पेशावर के निकट पराजित हुआ – आत्म हत्या कर लिया।
- पुनः कन्नौज, मथुरा, वृन्दावन, मन्झावन (ब्राह्मणो का किला के नान से विख्यात) आदि को जीता।
- विधाधर गण्ड को पराजित किया। (चंदेल)
- 1025 में सोमनाथ को जीता। इस समय यहाँ का शासक चालुक्य राजा भीम देव था। इसने पुनः निर्माण करवाया।
- अंतिम – 1027 जाटो को पराजित किया।

1. महमूद भारत में किसी भी हिन्दू राजा से पराजित नहीं हुआ।
2. इसने पंजाब सिन्धु और मुल्तान को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
3. यह महान न्याय प्रिय था। लेकिन यह कुशल शासन प्रबंधक न था।
4. इसके दरबानर में– अलबरूनी, उतवी, टकराव, वैहाकी, उजारी, तूसी, उन्सुरी तथा फिरदौसी निवास करता था।

गजनी में इसने एक विश्वविद्यालय एक पुस्तकालय तथा एक अजायब घर स्थापित किया था।

———————————————————

मुहम्मद गोरी

राजधानी – गोर
वशं – शंसबनी तुर्क
लक्ष्य – भारत में एक साम्राज्य स्थापित करना गजनवी तथा गोये के मध्य भयंकर शत्रुता थी।

आक्रमण – 12वीं सदी में–

1. गोरी के आक्रमण के समय केवल पंजाब पर गजनवी वंश का शासन था, जिसका शासक खुसरव था। शेष सिन्ध व मुल्तान अन्य स्वतंत्र मुस्लिम राज्य था।
2. आक्रमण के रास्ते –दो
प्रथम– सबसे पहले गोरी भारत पर गोमल के दर्रे से होकर सिन्ध तक पहुंचने का मार्ग अपनाया।

गोरी सर्वप्रथम 1175 में इसी रास्ते से मुल्तान पर आक्रमण किया और उसे सरलता से जीत लिया। लेकिन 1178 में उसे गुजरात के मूलराज द्वितीय से पराजित होना पड़ा। अतः उसने इस मार्ग को छोड़ दिया।
द्वितीय मार्ग उसने पंजाब की ओर से अपनाया।
3. पंजाब को जीता खुसरो को पराजित किया।
4. तराईन के युद्ध में कुछ हिन्दू राजा पृथ्वीराज की सहायता किये थे। लेकिन पृथ्वी राज की महत्वकांक्षा के कारण उसकी अन्य प्रसिद्ध राजवंशों से शत्रुता थी क्योंकि वह चालुक्य शासक मूलराज द्वितीय, चंदेंल शासक परमर्दि देव तथा जयचंद को पराजित कर चुका था।

गारी ने पृथ्वी राज को मार कर उसके पुत्र को अजमेर का शासक बनाया।
5. इसके बाद गोरी – दिल्ली, मेरठ, रणथम्भौर, बयाना, ग्वालियर को जीता।
6. बदायूँ वाराणसी तथा कन्नौज को ऐबक ने जीता।
7. बंगाल शासक लक्ष्मण सेन तथा बिहार को इख्तियारूद्दीन बख्तियार खिलजी ने जीता। यद्यपि बंगाल का पश्चिमी कुछ भाग ही जीता गया था। बिहार के नालंदा व विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को ध्वस्त किया गया। बंगाल में लखनौती को राजधानी बनाया गया।

8. 1206 में खोखरों के दमन के समय मृत्यु विशेष–

- गोरी आरम्भ में अपने विजित प्रदेशों में हिन्दू राजाओं को ही शासक नियुक्त किया।
- 1193 में दिल्ली भारत में गोरी राज्य की राजधानी बनायी गयी।
- गोरी ने मथुरा को नहीं जीता था न ही आक्रमण किया था।
- गोरी का एक उद्‌देश्य यह रहा कि हिन्दू राजा मिलकर कोई संगठन न बनाये इसलिये वह इनका सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहा।
  फिर भी वह मंदिरों को ध्वस्त किया धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया।
- गोरी गजनी व गोर दोनो का शासक रहा।